International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 32-34

साठोत्तरी कहानी में राष्ट्रीय संवेदना

डॉ० संतोष रामचंद्र आडे
संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी, जि. जालना महाराष्ट्र, भारत।

प्रस्तावना

आज की हिंदी कहानी में मनोविज्ञान, संन्नास कुंठा की परिधि से बाहर निकल कर यथार्थ की भूमि पर स्वछंद रूप से विचरण कर रहा है। कहानीकार कमलेश्वर का कथन है –"आज का कहानीकार देख रहा है कि राजनीति ने सामान्य आदमी को मात्र एक मोहरा बना दिया है, ऐसी स्थिति में सामान्य की यातनाएँ अधिक समृध्द और मारक हुई है। आज का लेखन मनुष्य की यातनाओं का मूक और तटस्थ साक्षी नहीं, अपितू उसका सहभोक्ता और सहयात्री भी है। इसीलिए आज की कहानियॉ संदर्भ सापेक्ष है। यह अनुभव सीमित न रहकर अनुभव के अर्थो तक पहुँचती हैं। जहॉ आदमी एक विराट ऐतिहासिक प्रांगन में मैजूज है। वह संघर्षशील यथार्थ का दौर है, जो मुक्ति और न्याय के लिए आदमी द्वारा आदमी का सबल पक्ष है। "

हिंदी साहित्य में कहानी का वास्तविक आगमन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से होता है। भारतेंन्दु युग में सर्वप्रथम भारतेन्दु ने "एक अदभुत अपूर्व स्वप्न' नामक कहानी की रचना की, परंतु कहानी कला की दृष्टी से इसे उच्च कोटी की नहीं माना गया। तथापि इसमें कहानी जैसी रोचकता मिलती है। द्विवेदी युग में 'सरस्वती' पत्रिका के संम्पादन से आधुनिक ढ़ंग की कहानियों को जन्म मिला। स्वातंत्र्योत्तर काल हिंदी कहानी साहित्य की दृष्टि से पर्याप्त महत्वपूर्ण काल है। स्वतंत्रता प्राप्त के बाद भारतीय नागरिक के मन में नये भारत की कल्पना थी। ऐसे भारत की जिससे संम्बध में उसने स्वतंत्रता से पूर्व स्वप्न संजोये थे। नये भारत के परिवर्तित हो रहे रूप का काफी सजग और कलात्मक चित्र हमें स्वातंत्र्योत्तर कहानी लेखन में देखने को मिलता है। 'सन 60 के बाद कहानीकार ने समाज के जीवन और मूल्य का कहीं आरोपित नहीं किया, उसने तो उसके अंदर से निकलते हुए सत्य को व्यक्त किया है।' डॉ नागेश्वर सिंह के अनुसार – 'साठोत्तरी कहानी में हीरो गौण हो गया है। उनमें विचार या कल्पना के स्थान पर भोगा हुआ सामाजिक यथार्थ ही अधिक मात्रा में व्यक्त हुआ है। साथ ही भोगे हुए यथार्थ की प्रामाणिकता पर भी बल दिया है।'[1]

'हिंदी कथा साहित्य में सन 1960 के बाद से एक नयी पीढ़ी आ गयी। सन 1950 के पहले की पीढ़ी यथार्थ के सृजन पर बल देती थी, 1950 के बाद की पीढ़ी में यथार्थ की अभिव्यक्ति को प्रमुखता मिली। सन 1960 के बाद की पीढ़ी यथार्थ की खोज में लगी हुई है।'[2] डॉ. विजय द्विवेदी के अनुसार 'साठोत्तरी कहानी मनुष्य के भीतर दबे हुए सूक्ष्म से सूक्ष्म धरातलों को संघर्ष के स्वर पर अभिव्यक्ति देती है। नियती और भाग्यवादी स्थिति अब नहीं रहीं। स्थिति से समझौता नहीं जूझने की प्रक्रिया जारी है। साथ ही संबंधों का विघटन भी तेजी से होता जा रहा है। राजनेताओं के सारे आश्वासन खोखले और झूठे साबित हो रहे हैं। जिस पुलिस पर रक्षा का भार है वही भक्षक बन रही है। इन सारी विसंगतियों का चित्रण साठोत्तरी कहानी में हुआ है।'[3]

साठोत्तरी कहानीयों में नारी जीवन में भी परिवर्तन दिखाई देता है। नारी अब अर्जनशील है। आर्थिक मामले में वह आत्म निर्भर होती जा रही है। जो नारी खुद अपने बलबुते पर आर्थिक स्थिति मजबूत कर रही है, वह पुरूष से दब कर नहीं रहना चाहती है। उसमें स्वाभिमान की भावना कूट–कूट कर भर जाती है। स्वाभिमानी नारी का जैसा चित्रण साठोत्तरी कहानीकारों ने किया है, वैसा शायद ही कभी पहले हुआ होगा। इस प्रकार आधुनिक कहानी में नव कथ्य, नव विचार एवं नव शैली का स्वरूप नजर आता हुआ दिखाई देता है।

राजनीतिक चेतना का स्वरूप

हर प्रकार से उपेक्षित पीड़ित, शोषित, कुंठित आम आदमी आपनी मुक्ति के मार्ग स्वंय खोजने लगा। जनमानस इस भ्रष्ट व्यवस्था के विरूध्द अपनी आवाज बुलन्द करने के लिए विवश हो गया। मध्यवर्गीय लोगों औ निम्नवर्गीय लोगों पर इसका सबसे अधिक प्रभाव रहा। आम लोगों ने अपने टुटे हुए सपनों की पीड़ा के अत्यंत नजदिकी से देखा और महसूस किया है।

'परमात्मा का कुत्ता' कहानी में लेखक ने भारत विभाजन के बाद शरणार्थियों के पुनर्वास की समस्या पर प्रकाश डाला है। 'साथ ही राकेशजी ने दप्तर के बाबुओं की निष्क्रियता, घुसखोरी आदि विसंगतियों पर प्रहार किया है।'[4] देश की सरकारी व्यवस्था की त्रुटियों को उजागर किया गया है। सरकार ने शरणार्थियों के पुनर्वास के लिए हर संभव कार्य किए परंतु सरकारी दप्तरों के कर्मचारियों ने भ्रष्टाचार एवं घूसखोरी को बढ़ावा दिया। ये कर्मचारी रिश्वत लेकर ही शरणार्थियों का काम करते थे, और जिसके पास रिश्वत के लिए पैसे नहीं होते थे, उनकी फाईलें सनवाई के लिए दूसरे टेबल पर जाती ही नहीं थी1 लोग हर दिन सुबह से ही अपने केस की पैरवी के लिए आ जाते थे। आज जब एक अधेड़ व्यक्ति अपने भाई की विधवा और उसके टी. बी. के बीमार लड़के और जवान लड़की के साथ दप्तर क आगे जोर–जोर से चिल्लाने लगता है। यह देख कर दप्तर के सभी कर्मचारी उसे चुप करने का प्रयास करते हैं। परंतु वह चुप नहीं होता, यह देखकर दप्तर के कर्मचारी उसका काम जल्द कर उससे छुट्टी पाने की कोशिश करते है।

मोहन राकेशजी ने निर्भय व्यक्ति के माध्यम से यह बताया है कि हमें अपने हक्क के लिए चुप नहीं रहना चाहिए बल्कि उसके आगे बढ़कर लड़ना चाहिए तभी हम सब मिलकर इन सरकारी कर्मचारीयों में फैले हुए भष्ट्राचार का अंत कर सकेंगे। इस कहानी में भ्रष्ट्राचार का खुलकर विरोध किया गया है क्योंकि यह आज देश की गम्भीरतम समस्या बनी हुई है, देश की प्रगति के लिए यह घातक सिध्द हो रही है। देश की शासन प्रणाली सुचारु और सरल होनी चाहिए जिससे एक आम आदमी को अपने काम के लिए परेशान न होना पड़े। लेकिन सरकारी कर्मचारी को रिश्वत के झूठन

की ऐसी आदत पड़ गई की बिना रिश्वत के एक भी कागज आगे बढ़ नहीं पाता अतः लेखक ने इस फैली शासन–व्यवस्था के विरूध्द विरोध के स्वर को बुलंद किया गया है।

मार्कण्डेयजी की कहानी में भूस्वामियों की सांमती मानसिकता शोषण और अत्याचार के विरूध्द आम आदमी का दुःखी स्वर राजतंत्र की भ्रष्ट नीतियॉ और भाई–भतीजावाद के कारण गरीबों की दयनीय दशा का वर्णन है। साधारण मनुष्य संघर्ष करता भी है तो समाज की ताकतें उसे दबा देती है। गॉव के पूँजीपतियों, देश के भ्रष्ट मंत्रियों और रिश्वतखोर सरकारी कर्मचारीयों की मिलीभगत के कारण आम मनुष्य का जीवन कष्टमय और उनकी दशा दयनीय होती जा रहीं है। भोला ने अपने पेट काटकर खेत खरीदा। भोला और उसकी पत्नी खुश है कि नहर निकलने पर वह अधिक तरकारी बेचा करेंगें। गॉव का संपन्न तिवारी जब देखता है कि इंजीनिअर उनके खेत से नहर निकालने जा रहा है तो वह तुरंत अपने आदमी को सिचॉई मिनिस्टर के पास भेजता है, जिसकी सिवारी ने पिछले चुनावों में धन और जन से भरपूर सहायता कर जिताया था। मंत्री तुरंत ईजीनियर को आदेश दे कर रास्ते को मुडवा देता है।

भोला और उसकी पत्नी से नहर के आने से जो मंसूबे बंदे थे वह सब इन सरकारी नीतियों के तहत कुचल कर रख दिये जाते है। रोने चिल्लाने के बावजुद भी नहर को इनके खेत से निकाल दिया जाता है। लेखक यही बताना चाहता है कि सरकार ने स्वतंत्रता के पश्चात गॉव के उध्दार को ध्यान में रख पंचवर्षीय योजनाओं का लागू किया। लेकिन इन पंचवर्षीय योजनाओं का लाभ गॉव के पुँजीपतियों तक ही सीमित हो कर रह गया। दूसरा यह की देश के भ्रष्ट नेताओं और प्रशासन में फैले भाई–भतिजावाद और घुसखोरी आदि के कारण सरकार द्वारा चलाई गई योजनाऍ गॉव के गरीब जनसामान्यतक पहुँच ही नहीं पाती। ये मंत्री जो जनता कीसरकार होने का डंका पीटते है, और जनता के वोटों से चुनाव जीतते है। लेकिन वो चुनाव जीतने क बाद जनता को भूलकर अपना व्यक्तिगत स्वार्थ सिध्द करते है। लेखक का उदेश ही है कि यहॉ की भ्रष्ट प्रशासन व्यवस्था और उनकी नीतियों को दिखाकर जनमानस को विद्रोह के लिए अंदोलित करता है।

सामाजिक चेतना का स्वरूप

आधुनिक काल में नविन शिक्षा प्रणाली से प्रभावित युवक–युवतियों ने नई सुधारवादी विचारधारा से प्रेरित होकर प्राचीन समाज व्यवस्था के प्रति विद्रोह की भावना को जन्म दिया है। अतः आज समाज व्यवस्था का संक्रमण रूप पाया जाता है। स्वतंत्रता के पश्चात बढ़ते औद्योगिकरण, निरंतर बढ़ती हुई जनसंख्या और आर्थिक परिस्थितियों से विवश, सामान्य मनुष्य अपने सामान्य परिवार के दायित्व का निर्वाह करने में असमर्थ होने के परिणाम स्वरूप संयुक्त परिवार का विघटन होने लगा हैं। समाज की पारिवारिक विघटन की स्थिति ने भी अनेक समस्याओं को जन्म दिया। सदियों से प्रताड़ित एवं बहिष्कृत नारी, शिक्षित और स्वाधीन होकर गृह सीमाओं को लांघकर अध्यापिका, डॉक्टर, वकील, राजनीतिक नेता के रूप में प्रशासनिक कार्यो में पुरूष की भांती सक्रिय हिस्सा ले रही हैं। यह इस युग की महान उपलब्धि कहीं जा सकती हैं। आधुनिक शिक्षा के प्रचार तथा प्रसार के परिणामस्वरूप नारी के कंधों पर न केवल पुरूष के समान दायित्व आ पड़ा हैं बल्कि उससे कुछ अधिक ही निर्वाह कर रही हैं। ऐसी स्थिति में परिवार और समाज का यथायोग सहयोग न मिलने के कारण नारी का जीवन अधिक संघर्षशील एवं तनावयुक्त होकर पीड़ित तथा दुःखी होता जा रहा हैं। नारी व्यक्ति के नये रूप एवं उनकी मनोवेदना को उजागर किया गया हैं।

आज इक्कीसवी सदी में भी हमारे समाज में दहेज की समस्या पनपती हुई दिखाई देती हैं। आर्थिक रूप से कमजोर निम्न–मध्यवर्ग इसका सबसे अधिक शिकार बना हुआ है। दहेज के कारण लड़की के मॉ–बाप अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता हैं। इतना ही नहीं अपितु विवश होकर अनमेल विवाह के लिए राजी होना पड़ता हैं। इसके परिणाम स्वरूप अनेक परिवारिक समस्याओं के निर्माण की संभावनाएँ पनपती हैं। कई बार दहेज के कारण नारी का जीवन कष्टमय हो जाता हैं। इसके बावजुद भी आज की नारी ने हार नहीं मानी हैं। वह आज भी अपने स्वर्णिम भविष्य को बनाने के लिए कटिबध्द और तत्पर हैं।

आर्थिक चेतना का स्वरूप

देश के कई आर्थिक आयोजन सफल आवश्य हुए हैं लेकिन शत–प्रतिशत नहीं। स्वातंत्र्योत्तर काल में देश के नवनिर्माण के लिए हर एक नागरिक को जागरूक एवं कर्तव्य–परायण होना चाहिए था लेकिन सभी ने अपने कर्तव्यों को भूला दिया। राजनेताओं ने जनता के बीच बड़े–बड़े समाजवादी वादे कि, सपने दिखाये लेकिन उनकी स्वार्थी दुनीतियों की वजह से देश में समाजवाद आ नहीं पाया1 जमींदारी उन्मूलन की चेतना से समाज में समानता पुष्पित होने क स्थान पर विषमता ही अधिक पल्लवित होती गई। गॉवों में भी भ्रष्टाचार, पक्षपात, भाई–भतिजावाद, रिश्वत आदि विकृतियों ने सरकार की आर्थिक योजनाओं को विफल बनाया लेकिन जनता में नई जागृति के संकेत भी स्पष्ट मिलने लगे हैं। वे अपने निजी मानवीय अधिकारों के प्रति सक्रिय और सजग होने लगे। इससे स्पष्ट है कि भारत सरकार ने कई ग्राम–विकास की कई योजनाएँ तो चलाई लेकिन उन सब योजनाओं के नियंता इतने स्वार्थी ओर देश–द्रोही थे कि उन योजनाओ का बाहरी प्रदर्शन दिखाकर सरकारी ग्रांटे हड़प ली। परिणाम स्वरूप ग्रामवासियों की दयनीय स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हो पाया। साठोत्तरीकालीन हिंदी कहानीकारों ने हमारे संक्रांतिपरक समाज में हो रहे विभिन्न राजनीतिक परिवर्तनों, आर्थिक नीतियों की असफलता के कारण जनता का अभावग्रस्त जीवन एवं अन्य विभिन्न समस्याओं के बीच उलझ रहे जनता के समष्टिगत संकट को अनुभव किया और साहित्यिक सम्वेदनात्मक स्तर पर उन्हे अपनी कहानियों में ढ़ाला हैं।

स्पष्ट हैं कि देश के वर्तमान अर्थतंत्र के खिलाप क्रांति के लिए वर्ग चेनता को अनिवार्य मानता है। आज देश मे नोट बंदी के कारण हमारे देश का अर्थतंत्र लड़खड़ा रहा हैं। देश की साधारण जनता भूख और मँहगाई की मार से तड़प रही हैं। इसके साथ ही आज समाज में वर्ग समन्वय की भावना उभरने लगीं हैं। दोने के बीच संघर्ष जारी है। सांमतवादी भावना और सर्वहरा वर्ग के बीच जो गहरी खाई आज दृष्टिगत हो रही हैं, उसे पाटने की आवश्यकता है। कहानीकार देश के सामाजिक–आर्थिक विकास में अवरोधक तत्वों की ओंर ध्यान एकत्रित करके उनके निराकरण की दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करते हैं।

उपसंहार

साठोत्तरी हिंदी कहानियों के अध्ययन से स्पष्ट है कि इस युग की राष्ट्रीय चेतना, कहानियों की संक्षिप्त कथावस्तु द्वारा भी विविधोन्मुखी रूप से निरूपित हुई है। देश की राजनीतिक परिस्थितियों से उभरी हुई आम जनता की अनुभूति का प्रभावशाली चित्रण किया है। देश की राजनीतिक स्वतंत्रता के पष्चात लोकतांत्रिक शाषण व्यवस्था में सरकार द्वारा जनता के दुःख दर्द

को दूर करके एक ऐसी परिस्थिति के निर्माण का लोगों के मन में सपना संजोया गया था। जहॉ हर व्यक्ति को जीवन निर्वाह की सरलता एवं सुगमता, जीवन सुरक्षा के समान अधिकार तथा जान–माल की रक्षा के लिए न्याय की प्राप्ति होगी। स्वतंत्रता प्राप्ति के सत्तर साल की लंम्बी अवधी बीत जाने पर भी इन स्वप्नों को साकार रूप नहीं पाया जाता हैं। राष्ट्रीय चेतना के सामाजिक स्वरूप को उजागर करने वाली लगभग कहानियों में परम्परागत सामाजिक समस्याएँ पनपती हुई नजर आती है। सामाजिक कहानियों में उभरनेवाला दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष नारियों के जीवन से संबंधित है जो पूर्णतः पुरूष प्रधान रहा है। नारीयों के प्रति हमारी संस्कृति में सम्मानीय द्रष्टिकोण का आग्रह आवश्य रहा है। जनता की आर्थिक स्थिति के उदेश्य से सरकार द्वारा अनेक योजनाएँ समय–समय पर प्रवर्तीत होती रही परंतु कई बार सरकार की नीतियॉ लाभप्रद बनने के स्थान पर विपरित परिणाम प्रदान करती रही है। परिणाम स्वरूप आज का शिक्षित नवयुवा अपने अंधकारमय भविष्य से आशंकित होकर अपना आक्रोश व्यक्त करता हुआ दिखाई देता है। नवयुवाओं के मन में आशा–आकांक्षा के स्थान पर निराशा, हताशा और उदासीनता का भरना देश के लिए एक चिंता का विषय कहा जा सकता है।

संदर्भ

1. साठोत्तरी हिंदी कहानी और महिला लेखिकाएँ : डॉ. विजया वारद, पृ. 105।
2. साठोत्तरी हिंदी कहानी पात्र और चरित्र –चित्रण : डॉ. रामप्रसाद, पृ. 109।
3. साठ के बाद की कहानी : समय बोध के निकर्ष पर : डॉ. नामेश्वर सिंह।
4. आधुनिक हिंदी कहानी : सं. धनंजय वर्मा।
5. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी का विकास : डॉ सुबेदारराय।
6. साठोत्तरी काहानियॉ : हिंदी समाचार।